राजनीतिक संस्कृति की अवधारणा : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ० निवेदिता कुमारी

एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग,

जी.डी.एम.जी.पी.जी. कॉलेज, मोदीनगर

Email: nivditamalik002@gmail.com

सारांश

राजनीति व्यवस्था के विकास के संवाहक के रूप में राजनीतिक संस्कृति की अवधारणा राजनीति विज्ञान की अभिन्न व अध्ययनप्रिय अवधारणा बन गई है और राजनीतिक विकास के मनोवैज्ञानिक पहलुओं को आधार भी प्रदान किया है। लुसियन पाई ने इसी पहलू के संदर्भ में लिखा है – ''प्रत्येक विशिष्ट समाज में एक सीमित और स्पष्ट राजनीतिक संस्कृति होती है जो राजनीतिक प्रक्रिया को अर्थ, स्वरूप और ढांचा प्रदान करती है।'' 1960 के दशक में आधुनिक राजनीति विज्ञान में पारसन्स, मैनहीन, सिडनी बर्मा, लुसियन पाइ, ऑमण्ड, बीर, उलम आदि विद्वानों ने राजनीतिक संस्कृति को तुलनात्मक विश्लेषण का मेरुदण्ड बना दिया। राजनीतिक संस्कृति ही एकमात्र ऐसी अवधारणा है जो राजनीति विज्ञान में तुलनात्मक अध्ययन का विकसित दृष्टिकोण प्रस्तुत करने में सक्षम है। आज राजनीतिक संस्कृति, राजनीतिक व्यवस्था व राजनीतिक विकास का मुख्य चर है। आधुनिक युग लोकतान्त्रिक व्यवस्था का युग है जिसमें आम जनता की सहभागिता मात्रात्मक व गुणनात्मक रूप से अधिक है। भारत में अभी संस्थाएँ विकासशील अवस्था में हैं। राजनीतिक व्यवस्थाओं के अंतर्गत कार्य करने वाली संस्थाओं का राजनीतिक मूल्यों को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका है। इसी से नागरिकों में अभिरूचि का निर्माण होता है। भारत में राजनीतिक संस्कृति का स्वरूप सकारात्मक रूप से धीरे–धीरे विकसित हो रहा है। सुशासन के लिए उत्तरदायी पैमानों के किर्यान्वयन की आवश्यकता है।

मुख्य शब्दः *राजनीतिक–संस्कृति, राजनीतिक–परिवेश, अभिजन, तुलनात्मक अध्ययन, राजनीतिक–प्रक्रिया, उपनिवेशवाद, सुशासन, मात्रात्मक व गुणनात्मक सहभागिता, अभिमुखीकरण, एक मूल्यात्मक संकल्पना, अनुभववादी विश्वासों, अभिव्यक्तात्मक प्रतीकों, भावनात्मक संवेदनात्मक अभिवृतियाँ, विकासशील व गत्यात्मक।*

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 17.03.2021
Approved: 27.03.2021

डॉ० निवेदिता कुमारी

राजनीतिक संस्कृति की अवधारणा : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

RJPP 2021, Vol. XIX, No. I,

pp.103-109
Article No. 15

Online available at : https://anubooks.com/rjpp-2021-vol-xix-no-1

डॉ० निवेदिता कुमारी

प्रस्तावना

आधुनिक युग में राजनीतिक संस्कृति की अवधारणा राजनीति विज्ञान विषय के अध्ययन की दृष्टि यद्यपि नयी संकल्पना है, परन्तु प्राचीन समय से सही सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक परिवेश किसी भी सभ्यता की संस्कृति का आधार रहे हैं, इसी परिवेश ने राजनीतिक परिवेश– शासन व्यवस्था, सत्ता, कानून, मूल्य, नागरिक, कर्तव्य, अधिकार, स्वतंत्रता का निर्माण किया है। निश्चित ही राजनीतिक संस्कृति, सामाजिक संस्कृति का ही हिस्सा है। राजनीतिक संस्कृति आमजन एवं अभिजन के बीच व्यवहारपरक रेखा अवश्य खींचती है। द्वितीय विश्व युद्ध के उपरांत अध्ययन की दृष्टि राजनीतिक शोधकर्ताओं ने इस प्रश्न का उत्तर खोजने के लिए प्रयास किए कि समान राजनीतिक संरचनात्मक ढांचे वाली राजनीतिक व्यवस्थाओं में व्यवहारात्मक अन्तर क्यों पाया जाता है तथा राजनीतिक विकास की दिशाएं व धाराएं भी अलग–अलग क्यों हो जाती हैं ? इसके लिए राजनीतिक शोधकर्ताओं व विश्लेषकों ने भारत, फ्रांस, अमेरिका, ब्रिटेन जैसे विकसित देशों और भारत, पाकिस्तान, घाना, मिश्र व अन्य अफ्रीकी विकासशील देशों की राजनीतिक व्यवस्थाओं का तुलनात्मक अध्ययन प्रारम्भ किया और परिणाम आश्चर्यजनक चकित करने वाले सामने आये। इन शोधों यह तथ्य उभरकर सामने आया कि समान राजनीतिक संरचनात्मक ढांचे वाली राजनीतिक व्यवस्थाओं के राजनीतिक विकास की विभिन्न दिशाओं में जाने का कारण इन देशों की राजनीतिक संस्कृति का स्वरूप है। उपनिवेशवाद के अंतर्गत पनपी राजनीतिक संस्कृति के कारण विकासशील देशों की राजनीतिक व्यवस्था के विकास का मार्ग अवरुद्ध हो रहा है, जबकि विपरीत स्वतंत्र रूप से विकसित सहभागी राजनीतिक संस्कृति विकसित देशों की राजनीतिक व्यवस्था के विकास को अनुकूल बना रही है।

इस प्रकार राजनीतिक व्यवस्था के विकास के संवाहक के रूप में राजनीतिक संस्कृति की अवधारणा राजनीति विज्ञान की अभिन्न व अध्ययनप्रिय अवधारणा बन गई है और राजनीतिक विकास के मनोवैज्ञानिक पहलुओं को आधार भी प्रदान किया है। लुसियन पाई ने इसी पहलू के संदर्भ में लिखा है – ''प्रत्येक विशिष्ट समाज में एक सीमित और स्पष्ट राजनीतिक संस्कृति होती है जो राजनीतिक प्रक्रिया को अर्थ, स्वरूप और ढांचा प्रदान करती है।'' 1960 के दशक में आधुनिक राजनीतिक विज्ञान में पारसन्स, मैनहीन, सिडनी बर्मा, लुसियन पाई, बीर, उलम आदि विद्वानों ने राजनीतिक संस्कृति को तुलनात्मक विश्लेषण का मेरुदण्ड बना दिया। राजनीतिक संस्कृति ही एकमात्र ऐसी अवधारणा है जो राजनीति विज्ञान में तुलनात्मक अध्ययन का विकसित दृष्टिकोण प्रस्तुत करने में सक्षम हैं आज राजनीतिक संस्कृति, राजनीतिक व्यवस्था व राजनीतिक विकास का मुख्य चर है।

राजनीतिक संस्कृति : एक मूल्यात्मक संकल्पना

राजनीतिक संस्कृति की अवधारणा संस्कृति के दर्शन एवं विचार पर आधारित है। संस्कृति में किसी देश के लोगों के व्यवहार, मान्यताएँ, विश्वास, साहित्य, परम्पराएं, कला–कौशल, सामाजिक मूल्य, परिवेश, आचरण, नैतिकता इत्यादि सम्मिलित होता है। ग्राहक वालास के अनुसार– ''संस्कृति विचारों, मूल्यों और उद्देश्यों का समूह है।'' कई राजनीतिक विद्वानों ने

राजनीतिक संस्कृति को राजनीतिक समाज के मूल्यों, विचारों व आदर्शों का समूह कहा है। इस अवधारणा को सर्वप्रथम ऑमण्ड ने 1956 में प्रयुक्त किया था। सामान्य तौर पर राजनीतिक संस्कृति किसी राज्य के लोगों की उन सामूहिक अन्तर्भावनाओं के समूह जिन्हें उसके द्वारा का नाम है जिन्हें उसके द्वारा राजनीतिक व्यवस्था की प्रतिक्रियाओं के रूप में व्यक्त किया जाता है। इसे विभिन्न विद्वानों ने अपने–अपने ढंग से निम्न तरह से अभिव्यक्त किया है–

- ऑमण्ड व पॉवेल के अनुसार– ''राजनीतिक संस्कृति किसी भी राजनीतिक प्रणाली के सदस्यों में राजनीति के प्रति व्यक्तियों के व्यवहारों तथा अभिमुखीकरण की पद्धति है।''
- लूशियन पाई के अनुसार– ''राजनीतिक संस्कृति उन अभिवृतियों, विश्वासों तथा मनोभावों का सेट या समुच्चय है, जो राजनीतिक प्रक्रिया को अर्थ व सुव्यवस्था प्रदान करता है। वह राजव्यवस्था के व्यवहार को नियन्त्रित करने वाली अन्तर्निहित पूर्वधारणाओं तथा नियमों की भी व्याख्या करता है।''
- ऑमण्ड व पॉवेल के अनुसार– ''राजनीतिक संस्कृति किसी भी राजनीतिक प्रणाली के सदस्यों में राजनीति के प्रति व्यक्तियों के व्यवहारों तथा अभिमुखीकरण की पद्धति है।''
- ए०आर० बाल के अनुसार– ''राजनीतिक संस्कृति उन अभिवृतियों और विश्वासों, भावनाओं और समाज के मूल्यों से मिलकर बनती है जिनका सम्बन्ध राजनीतिक पद्धति तथा राजनीतिक प्रश्नों से रहता हे।''
- पारसन्स के अनुसार – ''राजनीतिक संस्कृति का सम्बन्ध राजनीतिक उद्देश्यों के प्रति किया गया अनुकूलन है।''
- सिडनी वर्बा के अनुसार– ''राजनीतिक संस्कृति में अनुभववादी विश्वासों, अभिव्यक्तात्मक प्रतीकों और मूल्यों की वह व्यवस्था शामिल है जो उस दशा को परिभाषित करती है जिसमें राजनीतिक क्रिया सम्पन्न होती है।''
- नेटल के अनुसार– ''राजनीतिक संस्कृति का अर्थ राज्यसत्ता से सम्बन्धित ज्ञान मूल्यांकन और संचारण के प्रतिमान या प्रतिमानों से है।''
- बीयर व उलम के अनुसार– ''समाज की सामान्य संस्कृति के कई पहलुओं का सम्बन्ध इस बात से होता है कि सरकार किस प्रकार चलाई जानी चाहिए और इसे क्या करने की कोशिश करनी चाहिए। संस्कृति के इस क्षेत्र को हम राजनीतिक संस्कृति कहते हैं।''
- स्पष्ट है कि राजनीतिक संस्कृति, राजनीतिक व्यवस्था के प्रति लोगों की अभिवृति, मूल्य व रुचि है जो राजनीतिक विश्वास की भावना पर आधारित है।

राजनीतिक संस्कृति की अवसंरचना व संघटक

राजनीतिक संस्कृति राजनीतिक समाज के लोगों की राजनीतिक व्यवस्था के प्रति अभिरुचियों, मूल्यों व राजनीतिक व्यवस्था के प्रति अभिरुचियों, मूलयों व विश्वासों पर आधारित व संचालित होती है। राजनीतिक संस्कृति में आत्मपरकता का गुण होने के कारण यह व्यक्तिगत अभिविकास या अनुकूलन का हिस्सा होती है और यह अनुकूलन ज्ञानात्मक, भावनात्मक तथा मूल्यात्मक तीनों

स्तरों पर होता है। ज्ञानात्मक अनुकूल का सम्बन्ध लोगों की राजनीतिक व्यवस्था के प्रति जानकारी से, भावनात्मक तथा मूल्यात्मक अनुकूलन का सम्बन्ध लोगों के द्वारा राजनीतिक व्यवस्था के मूल्यों व निर्णयों से होता है। अनुकूलन की दृष्टि से राजनीतिक व्यवस्था के तीन घटक होते हैं – मूल्य, विश्वास और संवेदनात्मक अभिवृत्तियाँ। प्रत्येक देश की राजनीतिक संस्कृति का निर्माण इन्हीं संघटकों से होता है। इन घटकों की प्रतिक्रिया–क्रिया ही प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था को सामान्य या विशिष्टता की ओर ले जाती है। इसी आधार पर राजनीतिक संस्कृति को राजनीतिक व्यवस्था की प्रकृति का नियामक भी कहा जाता है। राजनीतिक संस्कृति के संघटकों घटकों का अवलोकन करके ही राजनीतिक संस्कृति की प्रकृति को भी निर्धाअिरत किया जा सकता है। अवधारणात्मक रूप से ये घटक इस प्रकार हैं–

मूल्य अभिवृत्तियाँ

प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था में राजनीतिक अभिरुचि रखने वाले लोग व्यवस्था के मूल्यों से निश्चित ही प्रभावित होते हैं। ये मूल्यात्मक अभिवृत्तियाँ राजनीतिक समाज के सार्वजनिक लक्ष्यों से सम्बन्धित विश्वास व आस्थाएँ होती हैं। उदाहरण के लिए लोककल्याणकारी मूल्य, समाजवादी मूलय, पूंजीवादी व बाजारवादी, उदारवादी मूल्य आदि। इसके अलावा राजनीतिक समाज में कुछ व्यवस्थात्मक राजनीतिक मूल्य होते हैं, जैसे समय पर निर्वाचन, संसद के विश्वास पर सरकार का चलना, लोकतान्त्रिक मूल्यों की अवस्थापना व पालन, कानून का शासन। सभी व्यक्तियों की रुचि इन उपरोक्त सभी मूल्यों में समान हो यह आवश्यक नहीं है। किसी भी अभिरुचि स्वतंत्रता में अधिक हो सकती है, किसी की आर्थिक प्रगति में, किसी की विकास के मापदंडों की अभिवृद्धि में और किसी की सामाजिक न्याय व समानता में हो सकती है, किसी की रुचि राजनीतिक स्थिरता में हो सकती है तथा किसी की कानून के शासन में हो सकती है। इसलिए राजनीति संस्कृति के आधार पर राजनीतिक व्यवस्थाओं की कार्यप्रणाली या व्यवहार में भिन्नता का कारण मूल्य अभिरुचियों में पाया जाने वाला अन्तर होता है। जब जनता तथा शासक वर्ग की मूल्य अभिवृत्तियां असमानता आ जाती हें तो राजनीतिक व्यवस्था का संकट पैदा हो जाता है।

विश्वासात्मक–अभिवृत्तियाँ

जनजता की राजनीतिक व्यवस्था के प्रति विश्वास की अभिवृत्तियाँ राजनीतिक मूल्यों से अभिन्न रूप से जुडी हुई होती हैं तथा घनिष्ठ सम्बन्ध रखती हैं। इसके अन्तर्गत वे अभिवृत्तियां हैं जो व्यक्तियों का राजनीतिक व्यवस्था के प्रति विश्वास की मात्रा तथा प्रकृति को निर्धारित करती हैं उदाहरण के लिए किसी व्यक्ति को वोट डालने में विश्वास हो सकता है तथा किसी का नहीं। ये वोट का विश्वास ही शासक और शासित के मध्य पारस्परिक संबंधों को निर्धारित करता है, यही व्यवस्था के स्वरूप का निर्माण भी करता है। इसी विश्वास में अन्तर आ जाने पर राजनीतिक संस्कृतियों में मात्रात्मक अन्तर आ जाता है और जनता का राजनीतिक व्यवस्था के प्रति विश्वास का स्वरूप भी परिवर्तित हो जाता है। इसी से राजनीतिक व्यवस्था का संचालन प्रभावित होता है। अतः राजनीतिक विश्वास ही राजनतिक संस्कृति के घटक के रूप में राजनीतिक व्यवस्था का नियामन व संचालन करता है।

भावनात्मक संवेदनात्मक अभिवृतियां

इस श्रेणी की अभिवृतियों का सम्बन्ध लोगों की राजनीतिक व्यवस्था के प्रति मनोवृतियों या मनोभावों से होता है। अपने देश या व्यवस्था पर गर्व की भावना की मात्रा हर व्यक्ति में अलग–अलग होती है। संस्थाओं के प्रति भी यह भाव अलग–अलग होता है। उदाहरण के लिए ब्रिटेन में लोगों का संसदीय शासन प्रणाली में विश्वास है और वे उसको सम्मान की दृष्टि से देखते हैं, जबकि अमेरिका में संसदीय शासन प्रणाजली के प्रति लोगों का दृष्टिकोण अधिक अच्छा नहीं है। इसका प्रमुख कारण संवेदनात्मक अभिवृतियों में पाया जाने वाला अन्तर ही है। अभिवृतियों में पाया जाने वाले अंतर के लिए राजनीतिक व सामाजिक परिवेश के कई कारक उत्तरदायी होते हें इस प्रकार उपरोक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि राजनीतिक संस्कृति के घटकों में पाया जाने वाला अन्तर राजनीतिक संस्कृति में मात्रात्मक भेद पैदा करता है और यही भेद आगे चलकर राजनीतिक व्यवहार व राजनीतिक विकास की भिन्नता के रूप में प्रकट होता हैं राजनीतिक संस्कृति एक विकासशील व गत्यात्मक अवधारणा हैं इसकी प्रकृति परिवर्तनशील तथा विकासोन्मुखी होती है। इसका निर्माण ऐतिहासिक विकास की पृष्ठभूमि में होता है। राजनीतिक व्यवहार और राजनीतिक संस्कृति का आपस में गहरा सम्बन्ध है। यह राजनीतिक व्यवस्था को प्रभावित करने वाले दबाव समूह व राजनीहितक दलों की गतिविधियों से भी काफी प्रभावित होती हे। इसके ऊपर कुछ आन्तरिक तथा बाह्य शक्तियों का भी प्रभाव पड़ता है। राजनीतिक संस्कृति का विशेष स्वभाव इसकी गतिशीलता है, जड़ता नहीं। एक राजनीतिक संस्कृति कई उप–संस्कृतियों को भी समेटे रखती है। इसे राजनीतिक एकता के प्रतीक के रूप में भी देखा जाता है। इसके अनेक रूप होते हैं और यह राजनीतिक एकता के प्रतीक के रूप में भी देखा जाता है। इसके अनेक रूप होते हैं और यह राजनीतिक व्यवहार को अंगीकार करने में सक्षम होती है। राजनीतिक संस्कृति प्रकृति में एक व्यक्तिपरक धारणा है, क्योंकि इसमें लोगों के विचारों विश्वासों व मूल्यों का अध्ययन किया जाता है। इसमें राजनीतिक व्यवहार के अनेक तत्व सम्मलित रहते हैं। राजनीतिक संस्कृति सामान्य संस्कृति का ही एक अंश होती हे, क्योंकि इसमें लोगों के राजनीतिक मूल्य व विश्वास ही शामिल होते हैं। राजनीतिक संस्कृति एक अमूर्त नैतिक अवधारणा है। राजनीतिक संस्कृति का स्वरूप प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था में अलग–अलग होता है, क्योंकि राजनीतिक संस्कृति के घटकों को प्रतयेक देश में अन्तर पाया जाता है। राजनीतिक संस्कृति व राजनीतिक विकास में गहरा सम्बन्ध होता है। राजनीतिक संस्कृति राजनीतिक समाजीकरण व आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को भी प्रभावित करती है। जड़ प्रकार की राजनीतिक संस्कृति, राजनीतिक आधुनिकीकरण, समाजीकरण व विकास का मार्ग अवरुद्ध कर देती है।

राजनीतिक संस्कृति के प्रकार

राजनीतिक संस्कृति में पाई जाने वाली मात्रात्मक विशेषताएँ अपने अनेक रूपों का परिचय स्वयं ही दे देती हैं। प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था में लोगों का राजनीतिक व्यवस्था के प्रति लगाव, विश्वास व मूलय अलग–अलग ढंग का होता है। कहीं पर लोग राजनीतिक व्यवस्था के प्रति

गहरा लगाव रखते हैं और राजनीतिक प्रक्रिया में सक्रिय सहभागिता रखते हैं तो कहीं पर इसका सर्वथा अीाव पाया जाता है। राजनीतिक समाज के सदस्यों की राजनीतिक सहभागिता ही प्रायः राजनीतिक संस्कृति की प्रतीक का निर्धारण करती है। निरन्तरता या सातत्य की दृष्टि से राजनीतिक संस्कृति परम्परागत व आधुनिक दो प्रकार की हो सकती है। जहां परम्परा व आधुनिकता में संघर्ष चलता रहता है वहां पर राजनीतिक संस्कृति के चर जहाँ विद्यमान होंगे वहीं राजनीतिक संस्कृति भी विकसित हो पायेगी। राजनीतिक संस्कृति का स्वरूप और प्रकार देशकाल के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक व शैक्षणिक परिवेश पर निर्भर है व्यवस्थाओं के प्रकार, उसके लक्ष्यों से ही राजनीतिक संस्कृति का आधार निर्धारित होता है। राजनीतिक संस्कृति का अध्ययन, देशों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, आर्थिक सूचकांक–विकास के मापदंडों के आधार पर मुख्यत दो श्रेणियों में हम विभक्त कर सकते हैं। (1) परिपक्व राजनीतिक संस्कृकति (2) अपरिपक्व राजनीतिक संस्कृति। को अध्ययन, देशों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, आर्थिक सूचकांक–विकास के मापदंडों के आधार पर मुख्यतः दो श्रेणियों में हम विभक्त कर सकते हैं। (1) परिपक्व राजनीतिक संस्कृति (2) परिपक्तव राजनीतिक संस्कृत। परिपक्व राजनीतिक संस्कृति विकसित देशों में पायी जाती है, जहाँ शिक्षा का स्तर, जीवन का आर्थिक स्तर अधिक होता हे, इसके विपरीत अपरिपक्तव राजनीतिक संस्कृति विकासशील देशों में पायी जाती है जहाँ राजनीतिक स्थिरता, शिक्षा, आर्थिक विकास, सामाजिक संघर्ष अभी भी बने हुए हैं।

भारत की राजनीतिक संस्कृति का स्वरूप एवं राजनीतिक परिवेश

1950 के दशक के बाद भारत ने कई मोर्चों पर निरंतर समस्याओं का सामना किया है। 70 साल किसी भी देश की व्यवसीा और राजनीतिक संस्कृति को विकसित होने के लिए बहुत कम समय होता है। राजनीतिक विकास को प्राप्त करने व स्थापना में समय लगता है इस लक्ष्य को पूर्व निर्धारित अवश्य शर्तों को पूरा करने के पश्चात् ही प्राप्त किया जा सकता है। भारत के नागरिकों में अभी विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक विषयों को लेकर उतनी राजनीतिक समझ विकसित नहीं हो पायी है कि राजनीतिक विकास की सीढ़ी के ऊपर के 3 पायदार पर आ सके। राजनीतिक संस्कृति के ऊपर विश्लेषित किये गये बिन्दुओं को यदि हम भारतीय व्यवस्था में रखकर देखते हैं तो पाते हैं कि भारत की राजनीतिक संस्कृति का स्वरूप एवं राजनीतिक परिवेश आधार भारत में राजनीतिक संस्कृति अभी प्रारम्भिक अवस्था में है भारत के प्राचीन इतिहास का अवलोकन करने पर पता चलता है कि राजनीतिक संस्कृति की व्यापकता शासक वर्ग तक ही थी। राजनीतिक व्यवस्था के राजतंत्रात्मक स्वरूप के कारण आम जनता तक इसका विस्तार नहीं था। आधुनिक युग लोकतान्त्रिक व्यवस्था का युग है जिसमें आम जनता ही सहभागिता मात्रात्मक व गुणनात्मक रूप से अधिक है। भारत में अभी संस्थाएँ विकासशील अवस्था में हैं राजनीतिक व्यवस्थाओं के अंतर्गत कार्य करने वाली संस्थाओं का राजनीतिक मूल्यों को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका है। इसी से नागरिकों में अभिरूचि का निर्माण होता है। भारत में रातनीतिक संस्कृति का स्वरूप सकारात्मक रूप से धीरे–धीरे विकसित हो रहा है। सुशासन के लिए उत्तरदायी पैमानों के किर्यान्वयन की आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. मृदुला सिन्हा, ''राजधर्म लोकधर्म : सामाजिक राजनीतिक व सांस्कृतिक मूल्यों की व्याख्या, दिल्ली।
2. Allen Paul, " Modern Politics and Government"
3. Gabriel A. Almond, G. Bingghan & two others," Comparative Politics Today : A World View ", 9th Edition, Longman Publication, 2007.
4. G. A. Almond and Sidniveba, "Civic Culture: Political Attitudes" 1963, USA
5. Nrman D. Palmer, " Indian Political System", 1961, Houghton Miffin Company.
6. "Rajya Shastra Sameeksha" , Jouranal , University of Rajasthan, Jaipur, Volume 9,10.
7. Reinhold Hetke, Tatiana Zimenkova (edt.)" Education for Civic and Political Participation : A Critical Approach", 2013, Routledge.
8. https://www.sciencedirect.com
9. https://www.polisci.columbia.edu